जनवरी २०१८

कीमत ₹ २०

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

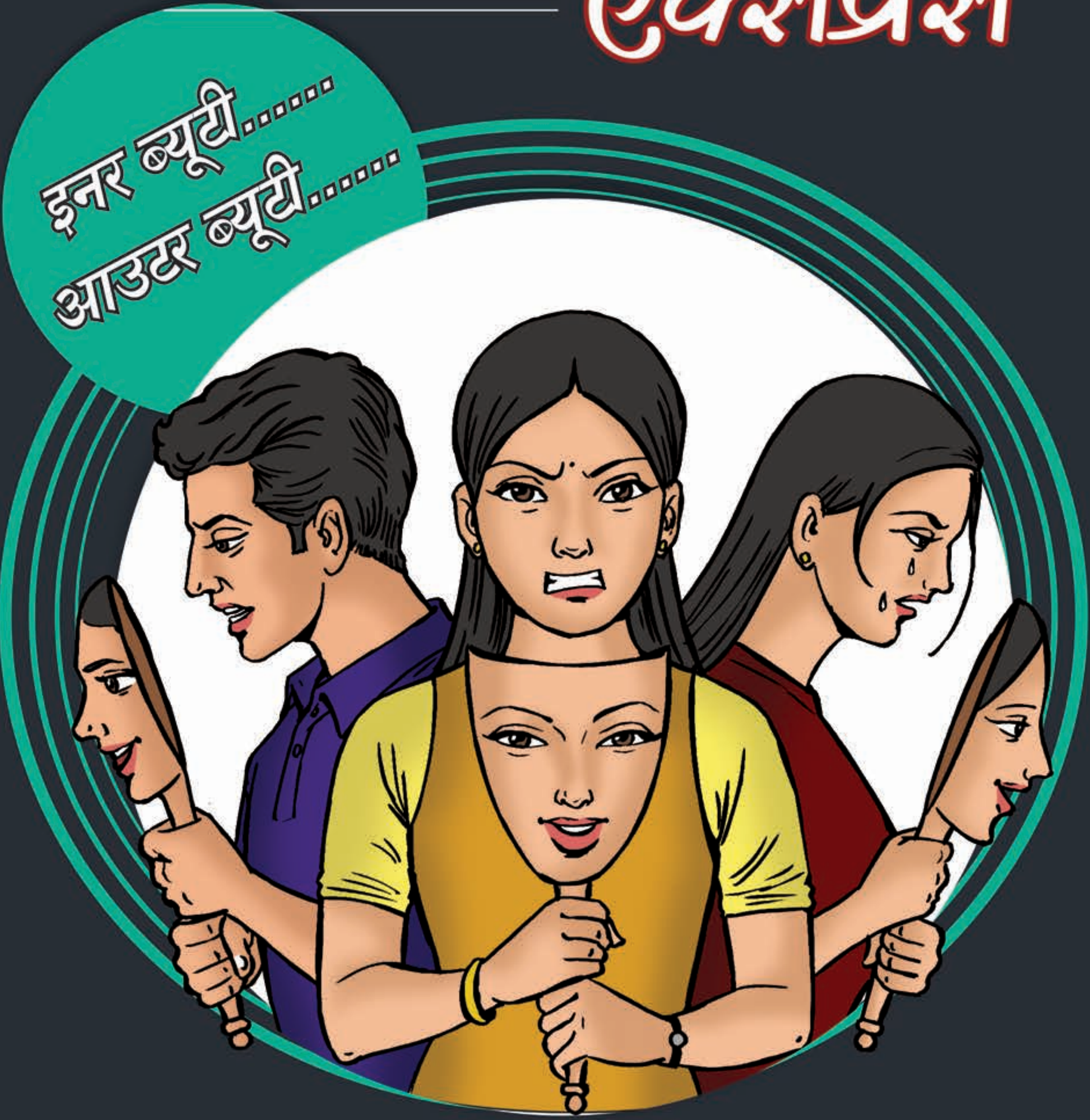

Welcome 2018
Happy New Year

संपादकीय

बालमित्रों,

आप दिन में कितनी बार आईने में देखते होंगे? और कितनी देर तक उसके सामने खड़े होकर अलग-अलग पॉज़ बनाकर अपने आप को देखते होंगे? सही बताना? शायद सब देखते हैं। उसमें भी लड़कियाँ तो खास। सुंदर दिखना किसे अच्छा नहीं लगता?

लेकिन क्या कभी सोचा है कि सचमुच अच्छा दिखना यानी क्या, असल सुंदरता किसे कहेंगे ...नहीं न?

तो आइए, आज इस अंक के माध्यम से आपको एक नई दृष्टि देते हैं। असल सुंदरता... अंदर की और बाहर की। इस बारे में समझते हैं और अपने जीवन में एक सही निर्णय लेते हैं।

-डिम्पल मेहता

इनर ब्यूटी......
आउटर ब्यूटी......

अक्रम एक्सप्रेस

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Ta & Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Ta & Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Ta & Dist-Gandhinagar.

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ५ अंक: १०
अखंड क्रमांक: ५८
जनवरी २०१८

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : इनर ब्यूटी के बारे में पूछना था।

दीपकभाई : चेहरे को आउटर ब्यूटी कहते हैं और स्वभाव इनर ब्यूटी। यदि स्वभाव बुरा है तो चाहे कितना भी रूपवान हो फिर भी सुंदर नहीं कहा जाएगा। और जो बाहर से कुछ खास रूपवान नहीं दिखता लेकिन यदि उसका स्वभाव अच्छा है तो सभी का प्रेमपात्र बन जाता है। यदि सब कहें कि, "यह बहन बहुत अच्छी है, किसी को दुःख नहीं देती। बहुत हार्टिली है। बहुत सेवाभावी है।" लेकिन वह इतनी रूपवान नहीं है, तो भी चलेगा या नहीं चलेगा?

बाहर का रूप यानी, यह सब मेक-अप करके अच्छा दिखना। यदि हमें सही शब्दों में कहना हो तो इस काल में ऐसा रूप होता ही नहीं है। यह तो बस चेहरे पर क्रीम आदि लगाते हैं इसलिए रूप दिखता है।

अब इनर ब्यूटी कहाँ से लाएँ? तो इस सत्संग से, समझ से, अच्छे संग में आने से आंतरिक रूप खिलता है। इससे आगे जैसे-जैसे अहंकार खत्म होता जाता है वैसे-वैसे व्यक्ति का रूप अलौकिक होता जाता है। अहंकार रूप को खा जाता है, लोगों के प्रेम को खा जाता है, लोगों को दुःख दे देता है। भगवान संपूर्ण अहंकार रहित हैं इसलिए उनका रूप देवताओं से भी सब से ज्यादा ऊँचा होता है। यह चमड़े का रूप तो एक दिन खत्म हो जाएगा। लेकिन यदि अहंकार खत्म हो गया तो रूप अलौकिक और हमेशा रहेगा।

दादा को देखो न... हज़ारों सालों तक लोग उन्हें याद करते ही रहेंगे कि, दादा का कैसा ज्ञान? दादा की कैसी बातें? कैसी करुणा? कैसा प्रेम? कैसी वीतरागता? जो लघुत्तम हो जाता है उनका रूप अलौकिक हो जाता है।

अहंकार में "मैं रूपवान हूँ, मैं अच्छी हूँ, मैं सुंदर हूँ..." ऐसा कहते हैं लेकिन यह अहंकार ही मार मारेगा। हमारा दम निकाल देगा।

यह अहंकार कब कम होगा? जब किसी को दुःख देना बंद कर देंगे तब। और बुद्धि कब कम होगी? जब दूसरों के दोष देखना बंद कर देंगे तब। इस तरह जब अहंकार और बुद्धि कम हो जाएँगे तब आंतरिक रूप, आंतरिक स्वभाव इतना सुंदर हो जाएगा कि फिर लोगों को उनकी उपस्थिति अच्छी लगेगी, उनकी बातें अच्छी लगेंगी, उनके साथ रहना अच्छा लगेगा।

आपको क्या पसंद है वह तय कर लेना।

असल सुंदरता

आईने में अपना प्रतिबिंब देखकर रूपा मुस्कराई और धीरे से बोली, "आज तो अच्छी तरह से टिपटॉप होना ही पड़ेगा न। ऐसी-वैसी दिखूँगी तो मुझे कौन वोट देगा।" वैसे भी रूपा को बनठनकर रहना अच्छा लगता है। और उस दिन तो उसके गर्ल्स कॉलेज में इलेक्शन था। "मोस्ट फेवरिट गर्ल ऑफ द कॉलेज" टाइटल के लिए सभी वोट देने वाले थे। जिसे सब से ज्यादा वोट मिलेंगे, वही "फेस ऑफ द कॉलेज" और जी.एस.(जनरल सेक्रेटरी) भी बनेगी।

तभी मम्मी की आवाज़ सुनाई दी, "ओ रूपा। चल न अब, कितनी देर है? बेटा नास्ता कर ले न। कॉलेज जाने में देर हो जाएगी। हे भगवान, यह लड़की तो ग़ज़ब की है। इतनी रूपवान होते हुए भी तैयार होने में घंटों निकाल देती है... आज तो हद ही कर दी... रूपा..."

उसमें दूसरा सुर भी मिल गया, "रूपा..."

अपनी फ्रेन्ड सोना की आवाज़ सुनकर रूपा फटाफट रूम से बाहर आई।

"सोना, आ गई तू? लुक एट यु... रोज़ की तरह माँजी टाइप ही, "अरे, आज तो मेकअप या डिज़ाइनर ड्रेस, कुछ तो..."

रूपा का वाक्य पूरा हो उससे पहले ही, सोना ने चश्मा ऊँचा उठाकर कहा, "बट, लुक एट यु, यु लुक ग्रेट।"

"एज़ ऑल्वेज़ राइट?" रूपा ने कंधे ऊँचे करके कहा। उसने फटाफट जूस का ग्लास गटगटाया। सेंडविच का टुकड़ा एक हाथ में लेकर, सोना की चोटी खींचकर, "चल, चल, अरे या...र। तेरी यह चपट चोटी और चिप चिप।"

जब दोनों कॉलेज ओडीटोरियम में पहुँची तब तक तो सभी अपनी अपनी जगह पर बैठ चुके थे। प्रोफेसर मि. त्रिवेदी पोडियम में थे। लड़कियाँ अंदर अंदर घुसरपुसर कर रही थीं।

"गुड़ मोर्निंग ब्यूटीफुल गर्ल्स" मि. त्रिवेदी ज़ोर से बोलें। क्लास एकदम शांत हो गई।

"सभी को आज के नियम तो पता ही होंगे। सभी को अपने सिवाय एक फेवरिट स्टुडेंट को वोट देना है। और हाँ, वोटिंग स्टार्ट करें उससे पहले किसी को मंच पर आकर बात करनी हो तो कर सकता है।"

पहले जिज्ञा आई। उसकी बात में उसके बोल्ड नेचर की छाप थी, "वी विल सेट एन एग्ज़ाम्पल ऑफ वुमन पॉवर। किसी की दादागिरी नहीं चलने दूँगी, देट्स द प्रॉमिस।" और वह कॉलर ऊपर करके चली गई।

प्रिन्सिपल की बेटी कविता ने कहा, "स्पोर्ट्स क्लब, फन ट्रिप्स और पार्टीस् ऑर्गेनाइज़ करेंगे। सभी त्यौहार और अकेशन्ज़ भव्य तरीके से मनाएँ ऐसे आयोजन करेंगे।"

रूपा अपनी विशेष अदा से बोली, "आई विल मेक श्योर कि बाहर अपना कॉलेज का रौब पड़ना चाहिए। शानदार शोज़ करके अन्य कॉलेजों को बता देंगे कि

हम ही बेस्ट हैं।"

ऐसे एक-एक करके कुछ लड़कियों ने मंच पर आकर बातें की। उसके बाद वोटिंग शुरू हुआ। कुछ ही समय में वोटिंग का रिज़ल्ट मि.त्रिवेदी के पास आ गया। लेकिन वह दूसरे दिन डिक्लेयर होने वाला था।

दूसरे दिन रिज़ल्ट जानने के लिए बेचैन लड़कियाँ समय से पहले ही ओडीटोरियम में आकर बैठ गई थीं। मि. त्रिवेदी ने मंच पर आकर सभी को संबोधित किया। "वेलकम माय फेवरिट गर्ल्स। सभी रिज़ल्ट सुनने के लिए तैयार हो?"

कुछ चेहरों पर बेचैनी, तो कुछ चेहरों पर उत्साह दिख रहा था। जिसे जीतने की इच्छा ही नहीं थी वे प्रसन्नता से इवेन्ट की मज़ा ले रही थीं।

"प्लीज़ वेलकम सोना उपाध्याय, मोस्ट फेवरिट गर्ल ऑफ द कॉलेज।" मि. त्रिवेदी ने अनाउन्स किया।

"व्होट!" रूपा को बहुत आश्चर्य हुआ। लेकिन आसपास की लड़कियों का उत्साह देखकर चेहरे पर बनावटी स्माइल लाकर उसने भी तालियों से सोना का अभिवादन किया।

मि. त्रिवेदी ने सोना को मंच पर बिठाया। कागज़ का एक बन्डल हाथ में लेकर बोलें, "अपने वोट्स के साथ सोना के लिए आपने जो अपनी भावनाएँ बताई हैं। उनमें से कुछ मैं पढ़कर सुनाता हूँ।"

"सोना का हेल्पिंग नेचर मुझे बहुत टच कर गया। मेरे प्रोजेक्ट में उसने रातों जागकर मेरी हेल्प की थी।"

"शी इज़ अ ट्रू फ्रेन्ड। मेरे पर्सनल प्रॉब्लेम में उसने मुझे सही मार्गदर्शन दिया था।"

"शी हैज़ अ मोस्ट ब्यूटीफुल हार्ट। अन्य ब्यूटीक्वीनस की तरह हमें एटिट्यूड बताकर नीचा नहीं दिखाती।"

"और अब मुझे भी सोना के लिए कुछ कहना है।" चश्मा उतारकर मि. त्रिवेदी बोलें, "अपने नम्र व्यवहार से सोना ने पहले दिन से ही मेरा दिल जीत लिया था। और आज मुझे बहुत खुशी है कि उसने आप सब के दिल भी जीत लिए हैं। अपनी कॉलेज में ऐसे ही एक प्रतिनिधि की ज़रूरत थी कि जो अंदर के सही सौन्दर्य का मालिक हो, जो उत्तम उदाहरण देकर कॉलेज की अन्य लड़कियों के लिए भी प्रेरणारूप बने। असल सौन्दर्य की

सुगंध होती है, बाकी बाहर का दिखावा तो कागज़ के फूल जैसा होता है।"

"एन्ड नाऊ इस द टाइम फॉर अ सरप्राइज़।" वातावरण को थोड़ा हल्का करने के लिए मि.त्रिवेदी ने कहा।

पिछले दिन मि. त्रिवेदी ने सोना के पेरेन्ट्स से सोना के बचपन के फोटोग्राफ लेकर, एक पॉवरपॉइन्ट प्रेजन्टेशन बनाया था। प्रेजन्टेशन शुरू हुआ और सभी प्रोजेक्टर स्क्रीन के सामने टकटकी लगाकर देखने लगे।

"ओह, सो क्यूट", "सो लवली" की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं।

प्रेजन्टेशन के अंतिम फोटो में सोना के सिर पर एक ताज था और हाथ में "ब्यूटी क्वीन ऑफ शिमला हाईस्कूल" का खिताब था। यह देखकर सभी की आँखें फटी की फटी रह गई।

"इतनी सिम्पल सोना, एक समय की ब्यूटी क्वीन थी?" रूपा के आश्चर्य का पार नहीं था और उसने ज़ोर से सोना से पूछा, "रियली सोना, तू ऐसी दिखती थी? तो फिर तू इतनी चेन्ज कैसे हो गई?"

सोना ने नटखट आँखों से रूपा के सामने देखा और कहा, "इसकी एक स्टॉरी है। उस दिन ब्यूटी क्वीन का खिताब लेकर में अपनी फ्रेन्ड्स के साथ कार में वापस घर आ रही थी। हम चारों फ्रेन्ड्स कार में बहुत मस्ती कर रहे थे। जैसे कल सुबह तू मुझे चिढ़ा रही थी, उसी तरह मैं अपनी फ्रेन्ड प्रीति को उसके सादेपन के लिए "चिप-चिप" करके चिढ़ा रही थी।

और अचानक सोना की आवाज़ गंभीर हो गई, "हमारी कार का एक्सिडेन्ट हो गया। ड्राइवर अंकल कुछ क्षण के लिए बेहोश हो गए थे। प्रीति के सिवाय सभी फ्रेन्ड्स घबरा गई। लेकिन प्रीति ने समय सूचकता से और धीरज से सब संभाल लिया।"

सोना की आँखें थोड़ी भींग गई, "उस घटना से मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा। उस दिन ब्यूटी क्वीन का खिताब मेरी गोद में पड़ा हुआ था। लेकिन उस खिताब ने मुझे शांति देने में कोई मदद नहीं की। उस समय मेरी ब्यूटी ने नहीं बल्कि प्रीति के शब्दों ने हमें उस धक्के से बाहर निकाला था। मेरी मम्मी ने मुझसे कई बार कहा था कि "मुश्किल समय में बाहर की सुंदरता नहीं बल्कि आंतरिक गुण हेल्प करते हैं। सुंदरता अलंकारों से नहीं, गुणों से बढ़ती है।" उस दिन मेरी सिम्पल फ्रेन्ड प्रीति के गुणों ने ही हमें ठंडक दी थी, ब्यूटी क्वीन बनने के लिए पहने हुए अलंकारों ने नहीं। तब मुझे सही सुंदरता की पहचान हुई। उस सुंदरता को प्राप्त करने के रास्ते पर कब मेरा मेकअप और ब्रान्डेड कपड़े पहनने का शौक खत्म हो गया उसका मुझे पता ही नहीं चला।"

सोना के शब्द रूपा को बहुत ही स्पर्श कर गए। उससे रहा नहीं गया और उसने मंच पर जाकर, सोना को गले लगा लिया। फिर से एक बार सभी लड़कियों ने तालियों की गड़गड़ाहट से सोना का अभिवादन किया।

हेल्दी एटिट्यूड

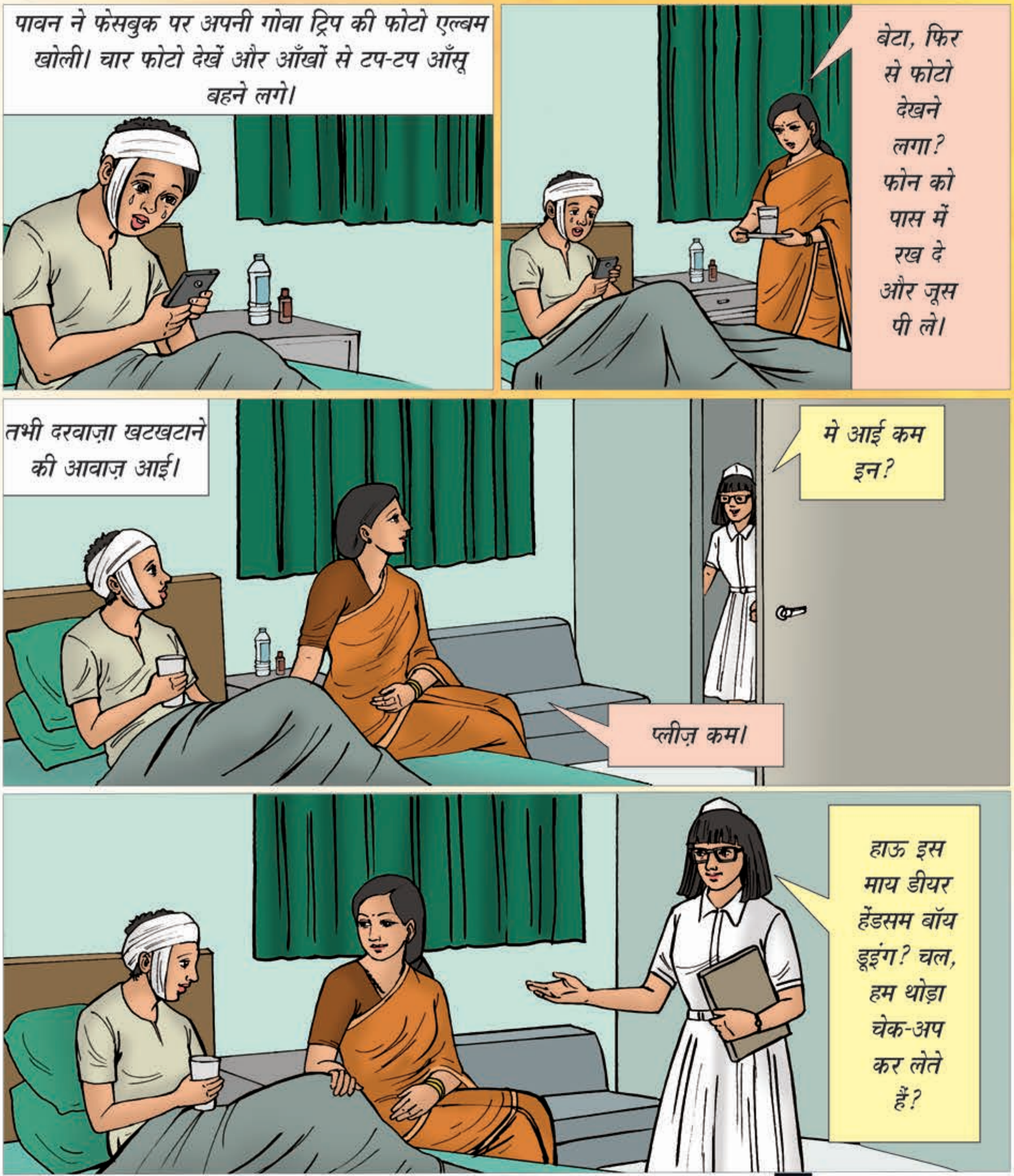
पावन ने फेसबुक पर अपनी गोवा ट्रिप की फोटो एल्बम खोली। चार फोटो देखें और आँखों से टप-टप आँसू बहने लगे।
बेटा, फिर से फोटो देखने लगा? फोन को पास में रख दे और जूस पी ले।
तभी दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ आई।
मे आई कम इन?
प्लीज़ कम।
हाऊ इस माय डीयर हेंडसम बॉय डूइंग? चल, हम थोड़ा चेक-अप कर लेते हैं?

"हेंडसम" शब्द सुनकर पावन के दिल को धक्का लगा। खुद को "मोस्ट" हेंडसम मानने वाला पावन, आज हॉस्पीटल के बेड पर, बीमारी से अपने बदले हुए रूप को देखकर दुःखी हो रहा था।
तभी पास के रूम से खिलखिलाकर हँसने की आवाज़ आई,
लगता है पास के कमरे में बहुत मज़ाकिया बच्चे हैं। थोड़ी-थोड़ी देर में हँसने की आवाज़ आती है।
हाँ, हास्य कलाकार आरुष जोशी का रूम है! आरुष हॉस्पिटल में सभी का फेवरिट है।
आरुष की कंपनी में हॉस्पिटल के बच्चे अपना दुःख भूल जाते हैं। अरे, बच्चों का ही नहीं, आरुष तो नर्सीस, डॉक्टर्स और दूसरे पेशन्ट्स का भी प्यारा है।
पावन तुम मिलोगे आरुष से? चलो, मैं तुम्हें उसके पास ले जाती हूँ।

आरुष मीट योर न्यू फ्रेन्ड, पावन।
एक-दूसरे की पहचान करवाकर नर्स वहाँ से चली गई।
आरुष के फनी जोक्स और मीठी बातें सुनकर, दो घड़ी के लिए पावन अपना दुःख भूल गया। लेकिन, अचानक मिरर में नज़र पड़ते ही, अपना शुष्क चेहरा देखकर, वह फिर से दुःखी हो गया।
आरुष, तुम इतने स्माइलिंग कैसे रह सकते हो?
पहले यह मुश्किल था। एक्सिडेन्ट से पहले मैं बहुत ही अलग था। लेकिन एक्सिडेन्ट ने मेरी दृष्टि बदल दी।
मुझे अपने गुड लुक्स का बहुत घमंड था। अहंकार ऐसा था कि चलते-फिरते लोगों का अपमान कर देता और मुझे पता भी नहीं चलता।

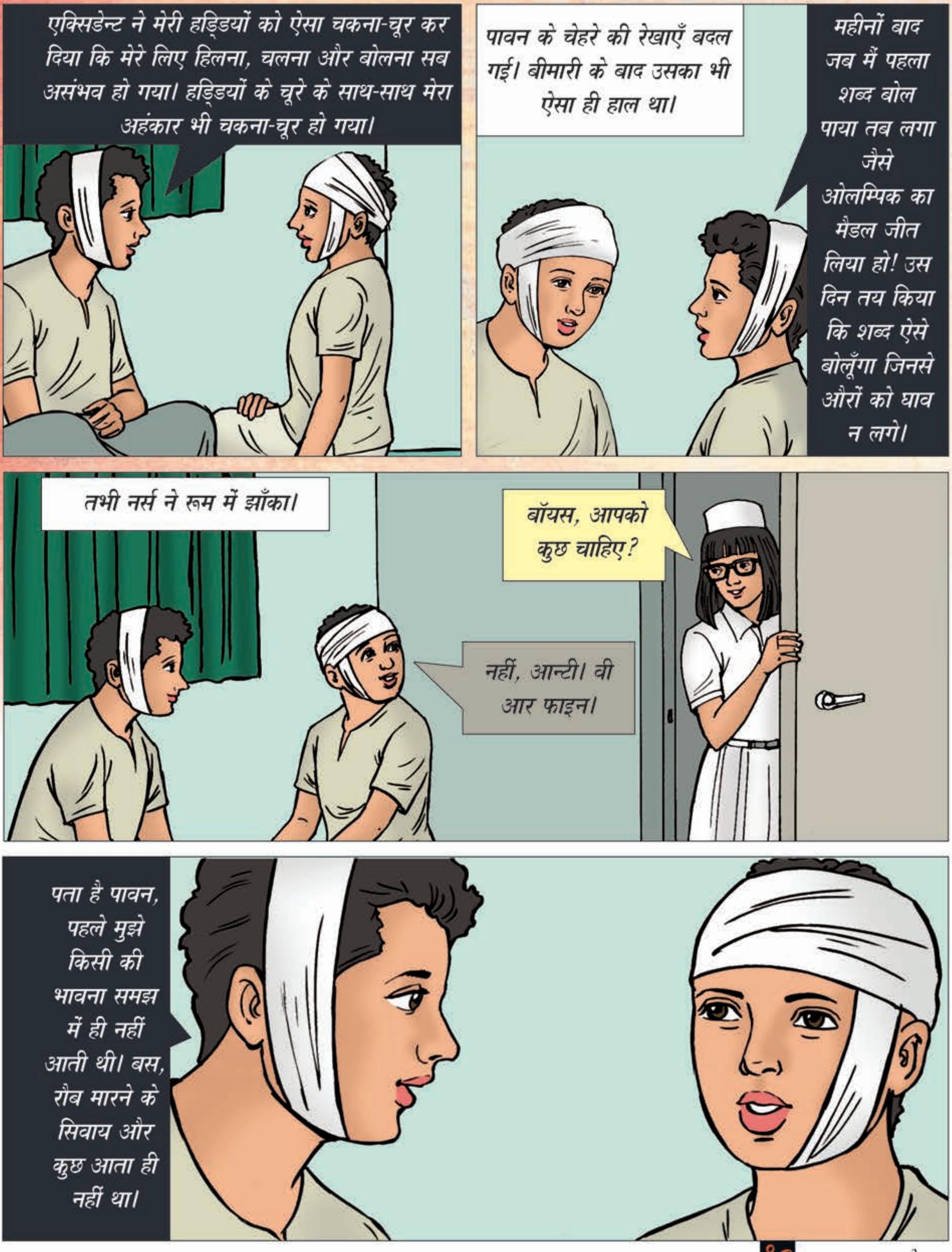
एक्सिडेन्ट ने मेरी हड्डियों को ऐसा चकना-चूर कर दिया कि मेरे लिए हिलना, चलना और बोलना सब असंभव हो गया। हड्डियों के चूरे के साथ-साथ मेरा अहंकार भी चकना-चूर हो गया।
पावन के चेहरे की रेखाएँ बदल गईं। बीमारी के बाद उसका भी ऐसा ही हाल था।
महीनों बाद जब मैं पहला शब्द बोल पाया तब लगा जैसे ओलम्पिक का मैडल जीत लिया हो! उस दिन तय किया कि शब्द ऐसे बोलूँगा जिनसे औरों को घाव न लगे।
तभी नर्स ने रूम में झाँका।
बॉयस, आपको कुछ चाहिए?
नहीं, आन्टी। वी आर फाइन।
पता है पावन, पहले मुझे किसी की भावना समझ में ही नहीं आती थी। बस, रौब मारने के सिवाय और कुछ आता ही नहीं था।

यहाँ, मुझे नर्स आन्टियों का हेल्पिंग और केयरिंग नेचर बहुत टच कर गया। उन्हें देखकर मुझे समझ में आया कि गुड लुक्स नहीं, बल्कि प्रेम ही हमें और औरों को आनंद देता है।
दोस्त, एक बात तो तय है। एक्सिडेन्ट से मेरा शरीर पहले से कमज़ोर हो गया है। लेकिन, मेरा एटिट्यूड पहले से अनेक गुना हेल्दी हो गया है।
तभी एक छोटा सा बालक आरुष की रूम में आया।
आरुष भैया, एक स्टॉरी सुनाओगे?
श्योर माय फ्रेन्ड! प्रिन्स की स्टॉरी सुनोगे?
छोटे से बच्चे के चेहरे पर एक खास चमक देखकर, पावन को आरुष के शब्द समझ में आए...
प्रेम ही खुद को और औरों को आनंद दे सकता है - "गुड लुक" नहीं।

चलो खेलें...

१. मित्रों, नीचे के २ चित्र में से बॉक्स में दिए गए शब्दों के अनुसार ५ अंतर ढूँढिए और किस चित्र की ब्यूटी ज्यादा है उसे पहचानिए।

उदाहरण रंग : गोरा है	रंग : श्याम है
चमड़ी :	
हास्य :	
आँखें :	
ओरा :	
आसपास के चेहरें :	

मित्रों, इसी तरह हमारी आंतरिक शक्तियाँ और आंतरिक सौन्दर्य हमें जीवन में ऊपर ले जाएँगे, हमारा बाहर का दिखावा नहीं।

बालमित्रों, क्या आप दादाश्री की जन्म जयंति मनाने राजकोट आए थे?

वहाँ एक अद्भुत अनुभव था न? जैसे कि हम एक अलग दुनिया में आ गए हों।

तो बालमित्रों, हम जिसका इंतज़ार कर रहे हैं, ऐसी भव्यातिभव्य दादा की जन्म जयंति

JJ 111...!

महात्माओं के द्वारा...

महात्माओं के लिए...

हमममम... जैसे-जैसे जन्म जयंति नज़दीक आए वैसे-वैसे उसके **Updates** लेना मत चूकना... है न?

२. दिए गए चित्र में से दो दियासलाई हिलाकर नवम्बर महीने की जन्म जयंति की तारीख प्राप्त कीजिए।

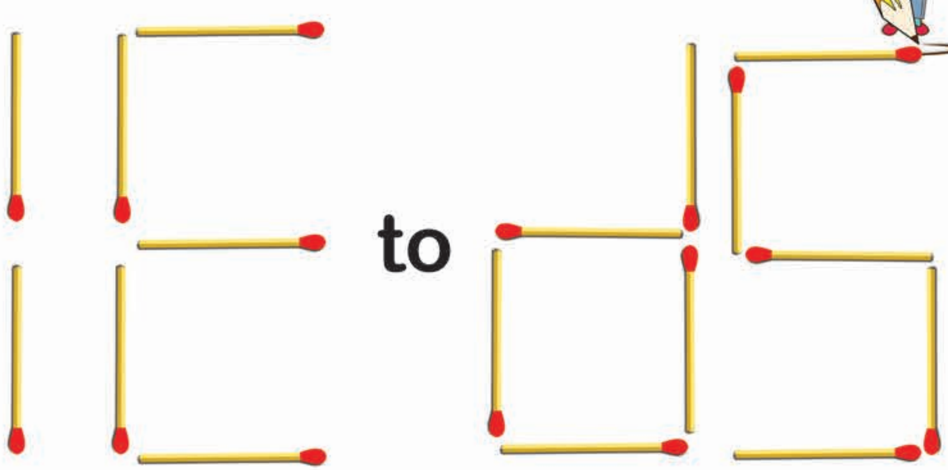

ऐतिहासिक गौरवगाथा

पांचाल देश के कपिलपुर नगर में जय नामक राजा राज्य करते थे। राजा बहुत धर्मिष्ठ थे।

एक बार राजा सभा में बैठे हुए थे। इतने में एक परदेशी भाट राजसभा में आया और राजा के गुणों की प्रशंसा करने लगा। यह सुनकर राजा ने कहा, "बारोट जी! आप कई राज्यों में घूमते हो। मेरे राज्य में आपको कोई कमी लगी हो तो बताइए। सिर्फ गुणगान सुनना मुझे अच्छा नहीं लगता।"

बारोट ने कहा, "महाराज, आपके राज्य में सबकुछ सुंदर है। लेकिन एक भी चित्रशाला नहीं है।"

राजा को बारोट का सूचन योग्य लगा। उन्होंने कुशल चित्रकारों को बुलाया और सभागृह के पास एक चित्रशाला तैयार करने के लिए कहा।

चित्रकारों ने आकर काम शुरू कर दिया। पहले तो नींव खोदी गई। नींव खोदते समय जमीन में से एक रत्न जड़ित मुकुट निकला। कारीगरों ने वह मुकुट राजा को दे दिया।

दिव्य मुकुट देखकर राजा को खुशी हुई। मुकुट खुद पर कैसा सुशोभित हो रहा है उसे देखने के लिए राजा ने अपना चेहरा आईने में देखा। आईने में उन्हें अपने दो मुख दिखाई दिए। उस घटना के बाद उनका नाम "द्विमुख" की तरह प्रसिद्ध हो गया।

चित्रकारों ने चित्रशाला तैयार कर दी। चित्रशाला के उद्घाटन के लिए, उस मकान के बीच में एक सुशोभित स्तंभ खड़ा किया गया। स्तंभ को वस्त्रों और अलंकारों से सजाकर, भव्य और आकर्षक बना दिया गया था। राजा उद्घाटन करने के लिए आए। चित्रशाला की नमूनेदार कारीगरी देखकर राजा बहुत खुश हुए।

बारोट से हर्षपूर्वक पूछा, "क्यों बारोट जी! अब यह चित्रशाला हमारे राज्य को शोभा दे ऐसी है न?"

बारोट ने कहा, "हाँ, महाराज। मैंने ऐसी चित्रशाला कहीं नहीं देखी।"

कुछ दिनों के बाद उद्घाटन के लिए खड़ा किया गया स्तंभ हटा दिया गया। उसके ऊपर से वस्त्रालंकार उतारकर उस स्तंभ को चित्रशाला के एक कोने में आड़ा रख दिया गया। समय के साथ उस स्तंभ पर धूल जमने लगी। परिणाम स्वरूप वह स्तंभ बिल्कुल बेडोल लकड़े के ठूंठ जैसा बन गया।

एक दिन राजा चित्रशाला में आए। वहाँ उन्होंने लकड़े का ठूँठ देखा।

राजा ने एक दरवान से पूछा, "यह लकड़े का ठूँठ यहाँ क्यों रखा है?"

दरवान ने जवाब दिया, "महाराज, जब आपने इस चित्रशाला का उद्घाटन किया था, तब जो स्तंभ खड़ा किया गया था वही स्तंभ उतारकर यहाँ रखा है।"

राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने सोचा, "उस भव्य और सुंदर स्तंभ की ऐसी दशा हो गई! क्या यह स्तंभ वस्त्र और अलंकारों से ही सुंदर लगता था?"

राजा गहरी सोच में डूब गए, "मेरा रूप भी इन वस्त्रों और अलंकारों की वजह से ही है न? लेकिन यह स्थाई कहाँ है? मेरे शरीर की भी एक दिन इस स्तंभ जैसी दशा हो जाएगी न। यह चमड़ी एक दिन मुरझा जाएगी। अभी सुशोभित दिखने वाले मेरे इस शरीर की भी अंत में इस लकड़े के ठूँठे जैसी दुर्दशा होने वाली है न? तो फिर आज ही, अरे! अभी ही, इस शरीर पर से ममता क्यों न उतार लूँ? समय का क्या भरोसा है? वास्तव में, ये वस्त्र, अलंकार और शृंगार के मोह में अंधा होकर मैंने आत्म कल्याण नहीं साधा।"

और उसी समय सबकुछ त्यागकर, राजा अपना आत्म कल्याण साधने के लिए निकल पड़े। कठोर तपस्या के बाद उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ। अंत में राजा द्विमुख मोक्ष पद को प्राप्त हुए।

कठोर तपस्या के बाद उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ। अंत में राजा द्विमुख मोक्ष पद को प्राप्त हुए।

जीवंत उदाहरण

रॉकी डेनिस का जन्म अमेरिका के केलीफोर्निया राज्य में हुआ था। २ वर्ष की उम्र में रॉकी को सी.डी.डी. नामक बिमारी का निदान किया गया। यह असामान्य बीमारी, करीब २२० मिलियन में एक को होती है। इस बीमारी में व्यक्ति के चेहरे का आकार विचित्र ढंग से बढ़ता जाता है और धीरे-धीरे वह डरावना बनता जाता है। डॉक्टरों ने निदान किया कि जब रॉकी ७ वर्ष का होगा तब उसकी मृत्यु हो जाएगी तब तक वह अंधा और मंद बुद्धि का बन जाएगा।

रॉकी की मदर को डॉक्टरों का निदान कबूल नहीं था। डॉक्टरों के कहे अनुसार जो असंभव था वह रॉकी की मदर को संभव करना था।

कई प्रयत्नों के बाद, रॉकी को एक नॉर्मल स्कूल में एडमिशन मिला। शुरुआत में अन्य बच्चे रॉकी के बाह्य दिखाव की वजह से उसका बहुत मज़ाक उड़ाते थे। उसे तरह-तरह के नाम से चिढ़ाते थे। लेकिन रॉकी ने अपने बाह्य दिखाव की हकीकत स्वीकार ली थी। ऐसी कठिन परिस्थिति में भी वह खुश रहना सीख गया था।

धीरे-धीरे रॉकी के रवैये ने बच्चों का दिल जीत लिया। समय जाते बच्चों की दृष्टि उसके बाह्य दिखाव पर नहीं बल्कि उसके आंतरिक गुणों पर पड़ने लगी। रॉकी के आंतरिक गुणों में उसका मज़ाकिया स्वभाव और उसकी नटखटता ने सभी का दिल जीत लिया था। हाईस्कूल में रॉकी को "बेस्ट बडी", "मोस्ट गुड नेचर्ड" और "फ्रेन्डसीएस्ट केम्पर" के इनाम मिले।

१६ वर्ष की उम्र में रॉकी का मृत्यु हुआ। जब यह समाचार स्कूल में पहुँचा, तब पूरी स्कूल गमगीन हो गई। स्कूल के एक टीचर ने कहा, "उस दिन ऐसा लगा कि जैसे रॉकी की गेरहाज़री में अब दुनिया इतनी सुंदर नहीं रहेगी। रॉकी की हाज़री का एक असाधारण प्रभाव था।"

और इस तरह रॉकी डेनिस, अपनी आंतरिक सुंदरता की छाप दुनिया पर छोड़ गया।

मीठी यादें

नीरू माँ की सेवा में एक ब्रह्मचारी बहन सिलाई-कढ़ाई के क्लास कर रही थीं। दोपहर का समय था। वे खाना खाने बैठी थीं। खाने के बाद तुरंत ही उन्हें क्लास में जाना था। समय की कमी की वजह से वे फटाफट खाना खा रही थीं। उसी समय वहाँ नीरू माँ आ गए।

बहन उठने लगीं लेकिन नीरू माँ ने उन्हें शांति से खाने के लिए कहा। उन बहन ने तो रोटी के तीन-चार टुकड़े करके खाने की तैयारी की थी। लेकिन नीरू माँ बैठकर उनकी दो रोटी के पचास टुकड़े कर दिए। टुकड़े बहन की थाली में रखें और कहा, "अब शांति से चबाकर खाओ। कुछ नहीं बिगड़ जाएगा।"

बहन ने कहा, "नीरू माँ मैं क्लास में प्रार्थना खत्म होने के बाद पहुँचती हूँ तो मैडम डाँटती हैं।" उन बहन को अंदर बहुत हड़बड़ी थी। क्लास में चलकर पहुँचने में उन्हें पंद्रह मिनट लगते थे।

नीरू माँ ने बहन से निश्चितरूप से कहा, "तुम शांति से खाना खा लो। कोई नहीं डाँटेगा।" और फिर प्रेम से समझाया, "तुम नेगेटिव क्यों करती हो कि तुम्हें कोई डाँटेगा? तुम्हारे इस नेगेटिव स्पंदन से नेगेटिव रिज़ल्ट आता है। तुम क्यों स्पंदन डालती हो?" और फिर कहा, "यदि तुम ऐसे जल्दी-जल्दी खाओगी और भूखी रहोगी तो हमें अच्छा नहीं लगेगा।"

वास्तव में उस दिन उन बहन को क्लास में पहुँचने में देर हो गई। लेकिन किसी ने उनसे कुछ नहीं कहा।

शाम को नीरू माँ ने उन बहन से पूछा, "आज किसी ने तुम्हें डाँटा?"

बहन ने कहा, "नहीं नीरू माँ। मैं देर से पहुँची लेकिन कोई कुछ नहीं बोला।"

नीरू माँ ने उन बहन को ज्ञान की समझ दी, "तुम्हारी ये बिलीफें कि कोई डाँटेगा, बोलेगा, देर हो जाएगी, वही तुम्हें डराती हैं। कोई बाप भी डाँटने वाला नहीं है।"

और उस दिन से नीरू माँ के ऐसे वचनबल वाले शब्दों से उन बहन का भय निकल गया।

इस तरह नीरू माँ अपने आश्रितों का संपूर्ण ध्यान रखते थे। वे भोजन के साथ-साथ ज्ञान की समझ भी परोस देते थे।

हरिद्वार में पूज्यश्री की निश्रा में पूज्य नीरूमाँ का जन्मदिन मनाया गया...

विविध सेन्टरों में पूज्य नीरू माँ का जन्मदिन मनाया गया...

पज़ल के जवाब

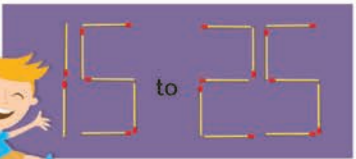

Akram Express
January 2018
Year : 5, Issue : 10
Conti. Issue No.: 58

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

और अंत में...

एक फेरी वाला था। रोज़ शाम को एक गार्डन में आकर वह हीलियम गैस से भरे हुए रंग-बिरंगी गुब्बारे बेचता था। बच्चों को वह बहुत प्रिय था। ऐसे रंग-बिरंगी गुब्बारे जो किसी और के पास नहीं मिलते वे उसके पास मिलते थे। गुब्बारों की कीमत भी अन्य से बहुत कम थी।

एक शाम को वह गुब्बारों में गैस भरकर बेचने की तैयारी कर रहा था। ६-७ वर्ष का एक बच्चा उस फेरी वाले को देख रहा था। फेरी वाले ने एक विचित्र चितकबरे रंग के गुब्बारे में गैस भरा। बच्चे को थोड़ी उलझन हुई। वह फेरी वाले के पास गया और पूछा, "अंकल इस गुब्बारे में गैस क्यों भर रहे हो? यह तो कितनी बदसूरत है।"

फेरी वाले ने हँसकर जवाब दिया, "रुको, देखो मैं तुम्हें कुछ बताता हूँ।" फेरी वाले ने उस गुब्बारे में ठीक से हवा भरकर आकाश में छोड़ दिया। गुब्बारा बहुत ऊपर चला गया। बच्चा आकाश की ओर देखता ही रह गया।

फेरी वाले ने बच्चे से कहा, "बेटा, गुब्बारे के अंदर जो भरा है वही गुब्बारे की ऊँचाई तय करता है, गुब्बारे का दिखाव नहीं।"

मित्रों, इसी तरह हमारी आंतरिक शक्तियाँ और आंतरिक सौन्दर्य हमें जीवन में ऊपर ले जाएँगे, हमारा बाहर का दिखावा नहीं।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर SMS करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025 and published